उसने कहा था

-पं० चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'

अति

क. 'उसने कहा था'- कहानी कब और कहाँ से प्रकाशित हुई थी?

उ० पं० ~~चन्द्र~~ चन्द्रधर शर्मा गुलेरी की तीसरी कहानी 'उसने कहा था' सरस्वती पत्रिका में 1915 ई. में प्रकाशित हुई थी।

ख. पं० चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' कहानीकार एवं निबंधकार के साथ किन विषयों में प्रतिष्ठित थे?

उ० पं० चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' कहानीकार एवं निबंधकार होने के साथ-साथ पुरातत्व, दर्शन, ज्योतिष, इतिहास, साहित्य, भाषाविज्ञान आदि के लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान थे।

घ. लड़का और लड़की सिख थे -

लड़का और लड़की के बालो एवं ढीले सुथने से यह समझ आता था कि दोनो सिख है।

ङ. लड़का और लड़की क्या लेने गये थे?

उ) लड़का अपने मामा के केश धोने के लिए दही एवं लड़की रसाई के लिए बड़ियाँ लेने चौक की दुकान पर गये थे।

च. लड़का और लड़की कहाँ ठहरे थे?

उ) लड़का नगर के गुरुबाजार में अपना के यहाँ आया था तथा लड़की माँझे में अपने मामा अंतरसिंह के यहाँ ठहरी थी।

छ. लड़की की कुड़माई की बात सुनकर लड़के पर क्या प्रभाव पड़ा?

उ) लड़की की कुड़माई की बात सुनकर लड़के का मन खिन्न हो उठता है एवं उसकी मनः स्थिति पर इसका बुरा प्रभाव पड़ता है।

ज. "बिना फेरे घोड़ा बिगड़ता है और बिना लड़े सिपाही।

उ) उपर्युक्त पंक्ति का तात्पर्य है कि जिस प्रकार घोड़े को प्रतिदिन न टहलाने से वह आलसी बन जाता है उसी प्रकार यदि सिपाही को युद्ध में भाग लेने का अवसर न मिले, तो वह भी आलसी बन जाता है।

इ. वजीरासिंह कौन था?

उ) वजीरासिंह पल्टन का विदूषक था।

अ. "चुप कर! यहाँ वालों को शर्म नहीं।"- पंक्ति के वक्ता एवं श्रोता का नाम लिखें।

उ) उपर्युक्त पंक्ति के वक्ता वजीरासिंह है एवं श्रोता लहनासिंह है।

ह. "हाँ याद आई। मेरे पास दूसरी गरम जर्सी है।"- पंक्ति का संदर्भ स्पष्ट करें।

उ) उपर्युक्त पंक्ति लहनासिंह बोधा से तब कहता है जब उसे ज्ञात होता है कि ठंड के कारण बोधासिंह की कँपकँपी छूट रही है एवं उसके दाँत बज रहे हैं। अतः बोधा की सहायता करने हेतु लहना उसे अपनी जर्सी उतारकर देता है एवं उससे यह झूठ कह देता है कि उसके पास एक